सम्पादक की कलम से.....

भारतीय संगीत और वैश्वीकरण'

वैश्वीकरण या भूमण्डलीयकरण शब्द लगभग 20वीं सदीं के आठवें दशक से प्रचार में आया। आगे चलकर इस सदीं के अन्तिम दशक में वैश्वीकरण की संकल्पना तेजी से उभरी, जो अब 21वीं सदीं में चर्चा का विषय बनीं हुई है। वैश्वीकरण ने जहाँ एक ओर समाज की संरचना और संस्कृति के व्यवहार को प्रभावित किया वहीं दूसरी ओर उद्योग, व्यापारिक नीतियों और राजनैतिक सम्बन्धों पर भी प्रभाव डाला। इस प्रकार साहित्य, समाज, कला, संगीत, व्यापार आदि विषयों में हो रही विभिन्न चर्चाओं का रुख किसी न किसी रूप में वैश्वीकरण ने अपनी तरफ मोड़ लिया।

संगीत में भी वैश्वीकरण की चर्चा हुई– कभी सेमिनार व संगोष्ठियों के माध्यम से तो कभी लेखों व शोधपत्रों के माध्यम से। भारतीय संगीत पर वैश्वीकरण के प्रभावों को लेकर अलग अलग विद्वानों में अलग अलग राय देखने को मिलती है। जैसे डा0 अनूप कुमार मिश्र वैश्वीकरण के दौर में भारतीय संगीत को एक सांस्कृतिक उत्पाद के रूप में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेचने का समर्थन करते हुए कहते है कि ''आधुनिक तकनीकी उत्पाद श्रृंगारयुक्त हो सकता है, इच्छाओं को जाग्रत करने वाला हो सकता है तथा निरंतर उपभोग को बढ़ाने वाला हो सकता है, परंतु शायद ही संतुष्टि देने वाला होता हो, लेकिन एक उपभोक्ता के रूप में भारतीय संगीत जैसे सांस्कृतिक उत्पाद से जो संतुष्टि प्राप्त होती है वो अतुलनीय है।'' तो संगीत विद्वान (स्व0) प्रो0 सुधीर कुमार वर्मा मानते है कि ''एकाधिकार की भावना से प्रेरित और अर्थ केन्द्रित वैश्वीकरण भारतीय आदर्शो 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सत्यं शिवं सुन्दम्' तथा 'सर्वे भवन्तु सुखना' जैसी मान्यताओं के विरूद्ध है।'' संगीत लेखक पं0 विजय शंकर मिश्र भारतीय संगीत पर वैश्वीकरण के प्रभाव की चर्चा करते हुए कहते हैं कि ''भारतीय संगीत शुरू से ही वैश्विक कला के रूप में प्रसिद्ध रहा है। प्राचीन काल में भी अपनी कला का उचित और समुचित मूल्य पाने के लिए संगीतकार भ्रमण करते रहते थे। समय बदला तो बहुत कुछ बदल गया। अब, आज का संगीतकार दूसरो की दया दृष्टि के सहारे अपनी जिन्दगी नहीं काटना चाहता। वह अपनी कला का उचित ही नही समुचित और कई बार मनमाना मानदेय भी चाहता है, जिसके लिए वह पूरी दुनिया में भ्रमण करता है। इस प्रक्रिया में अपने उत्पाद को बेचने के लिए, ग्राहकों की सन्तुष्टि के लिए कई बार इसे अपनी कला में समयानुकूल प्रयोगात्मक परिवर्तन जबरन करना पड़ता है। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठ खड़ा होता है कि इस प्रकार के प्रयोगों की चक्की में पिसते हुए 'हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत' कितना 'हमारा' रह जाएगा और कितना 'भारतीय' और कितना 'शास्त्रीय'?

क्योंकि, बाजार की माँग तो हमेशा बदलती रहती है।'' संगीत विदूषी डॉ0 आकांक्षी अपनी पुस्तक 'भारतीय संगीत और वैश्वीकरण' में लिखती है कि ''हमारा भारतीय संगीत एक अमूल्य सांस्कृतिक उत्पाद है जो वैश्वीकरण के बाजार में विक्रय योग्य है, जिसकी भारी मांग है तथा जिसे खरीदने के लिए कोई भी मूल्य दिया जा सकता है। अतः आज जरूरत ऐसे सांस्कृतिक अर्थशास्त्र की है जो भारतीय संगीत, संस्कृति एवं परम्परा को विकृत किए बगैर विश्व के बाजार में छा जाने का उपाय ढूंढ सके।''

जाहिर है कि संगीत में वैश्वीकरण के प्रभावों को लेकर गंभीर चिंतन मनन चल रहा है। लेकिन एक बात जो स्पष्ट है कि वैश्वीकरण वर्तमान में समय के समानान्तर घटित होने वाली प्रक्रिया है जो परिवर्तनकारी है। इस परिवर्तन की बयार में हर छोटा–बड़ा कलाकार Local से Global हो जाना चाहता है। वैश्वीकरण या Globalization ने पिछले कुछ वर्षो में मानव के मन, समाज, संस्कृति व नैतिक मूल्यों को इतनी गहराई से प्रभावित किया है कि आज हर कोई Globalization के Glow से प्रभावित और उसके बल के आगे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से नतमस्तक दिखाई देता है।

डॉ0 अमित कुमार वर्मा